20

उनको प्रणाम

(कविता)

व्याकरण-बिंदु	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• टेक वाली कविता	• कविता	• विशेष्य-विशेषण • समानार्थक शब्द • सामासिक शब्द • तत्सम शब्द	• सफलता और सार्थकता में • समानार्थक शब्द अंतर स्पष्ट करना • सामासिक शब्द • साहस, संकल्प, संघर्ष की • तत्सम शब्द सराहना • प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना • उपेक्षितों का महत्त्व

मूल भाव

इस कविता में कवि ने उन लोगों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट किया है, जिन्होंने अपने जीवन में साहस वीरता, उत्साह, परिश्रम, निष्ठा और ईमानदारी के साथ संघर्ष तो किया, लेकिन संसाधनों के अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। कविता की दृष्टि में सफलता-असफलता से अधिक महत्त्व किसी उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों का है।

इस भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने योद्धाओं, नाविकों, पर्वतारोहियों, क्रांतिकारियों आदि के उदाहरण दिए हैं। इन क्षेत्रों में कामयाबी पाने वाले लोगों के नाम दुनिया जानती है, लेकिन इन कामों को शुरू करने वाले और आगे बढ़ाने वाले लाखों ऐसे लोग थे, जो गुमनाम रह गए। कवि ऐसे लोगों को आदर और सम्मान देते हुए उन्हें बार-बार प्रणाम करता है।

मुख्य बिंदु

- जीवन में सफलता का ही नहीं, संघर्ष का भी महत्त्व है– ऐसा मानते हुए कवि उन लोगों के प्रति आदर प्रकट करता है, जिन्होंने जीवन के अनेक क्षेत्रों में उत्साह से कार्य किया, लेकिन असफल रह गए।
- जीवन में कभी-कभी ऐसे मौके भी आते हैं, जब उद्देश्य-प्राप्ति के लिए अपेक्षित साधनों की कमी हो जाती है।
- कुछ लोग केवल उत्साह के बल पर बड़े-से-बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं।
- बलिदान करने वाले लोग वे ही नहीं हैं, जिन्हें हम याद रखते हैं, बहुत से बलिदानी ऐसे भी हैं, जिन्हें दुनिया भूल गई है।
- अनेक साहसी और दृढ़व्रती लोगों की दृढ़ता का अंत भीषण यातनाओं ने कर दिया। इन लोगों ने कभी अपने लाभ और साहस का विज्ञापन नहीं किया– दुनिया चाहे इन्हें असफल माने, कवि इन्हें प्रणाम करता है।

आइए समझें

- कविता के आरंभिक दो अंशों में कवि ने दो तरह के लोगों का उल्लेख किया है। एक तो वे, जो रणक्षेत्र में पूरी तैयारी और साहस से जाते हैं, पर युद्ध समाप्त होने से पहले ही साधनहीन हो जाते हैं। दूसरी तरह के वे हैं, जो छोटी-सी नैया के आधार पर समुद्र को पार करने की मन में ठान लेते हैं। ऐसे लोग चाहे अपने उद्देश्य में असफल रह जाएँ, पर कवि इनके उद्देश्य से अधिक इनकी तैयारी, साहस और कुछ कर गुज़रने के निश्चय को महत्त्वपूर्ण मानता है और इनके प्रति आदर व्यक्त करता है।
- कवि ऐसे लोगों का भी उल्लेख करता है, जो ऊँचे-से-ऊँचे शिखर पर पहुँचने के लिए पूरे उत्साह से बार-बार प्रयास करते हैं। ये लोग शिखर पर न पहुँचे हों, बीच में ही इन्होंने समाधि ले ली हो या असफल होकर नीचे उतर आए हों– ये स्तुत्य हैं, क्योंकि इन्होंने आदर्शों तथा जीवन-मूल्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास किया।
- ऐसे भी देशभक्त हुए हैं, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी। ये आज़ादी का सुख नहीं ले पाए। इनके संघर्ष और बलिदान से मिली आज़ादी का सुख हम सब उठा रहे हैं और यह विडंबना ही है कि इन लोगों को हम भूल गए हैं। कवि ऐसे लोगों को याद करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। ऐसे लोगों में वे लोग भी आते हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन कारागार में ही बिता दिया। निरंतर जूझते रहने वाले लोगों की स्वाधीनता-प्राप्ति की धुन का अंत करने के लिए इन्हें हमेशा के लिए बंदी बना लिया गया।
- कविता के अंतिम अंश में ऐसे लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया है, जिन्होंने निस्वार्थ-समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। यह सेवा अतुलनीय है। इन लोगों ने अपने कार्यों का कभी प्रचार भी नहीं किया अर्थात् अपने त्याग और बलिदान को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझा, अतः श्रेय पाने की चिंता कभी नहीं की।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण.बिंदु

- **विशेष्य — विशेषण**

  तीर — कुंठित, लक्ष्य भ्रष्ट, अभिमंत्रित

  नैया — छोटी-सी

  शिखर — उच्च

  उत्साह — नव-नव

- **समानार्थक शब्द**

  समुद्र = जलधि, अंबुधि, वारिधि→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + धि (धारण करने वाला)

  बादल = जलद, अंबुद, वारिद→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + द (देने वाला)

  कमल = जलज, अंबुज, वारिज→
  जल, अंबु, वारि (पानी) + ज (उत्पन्न या पैदा होना)

- **सामासिक-पद**

  पूर्ण-काम, उदधि-पार, कृत-कृत्य, हिम-समाधि आदि।

सराहना-बिंदु

- यह कविता बने-बनाए सोच को तोड़कर आम आदमी का ध्यान इस ओर ले जाती है कि समाज-निर्माण में उन लोगों का योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, जो जीवन-भर जूझते रहे और संकटों के बावजूद जिन्होंने हार नहीं मानी। कवि परिणाम को नहीं, कर्म अथवा प्रयास को महत्त्व देता है। इसी भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने अनेक उदाहरणों का प्रभावशाली उपयोग किया है। कविता में 'उनको प्रणाम' बार-बार आता है। इसके माध्यम से कवि इस बात पर बल देता है कि जिनकी उपेक्षा की गई है, मैं उनको प्रणाम करता हूँ। यानी वे प्रणम्य हैं।
- इस कविता में भावों के अनुकूल तत्सम तथा बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया गया है। शब्द-चुनाव भी संगत है।

क्या जानना ज़रूरी है

- आजकल जीवन के अनेक क्षेत्रों में उपेक्षितों को महत्त्व दिलाने के प्रयास हो रहे हैं। इस प्रयास से लोकतंत्र सार्थक होता है। इतिहास-लेखन में भी इस संदर्भ में प्रयास किया गया है।
- बिना जाने-बूझे किसी भी व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उसमें अनंत संभावनाएँ हो सकती हैं।
- किसी भी व्यक्ति के प्रयास की महत्ता उसकी सफलता में नहीं, बल्कि उसकी सार्थकता में होती है।

योग्यता बढ़ाएँ

- इसी भाव-संवेदना से मिलती-जुलती कोई अन्य कविता ढूँढकर पढ़िए।
- राष्ट्रीय स्वाधीनता-संघर्ष में बलिदान देने वाले उन क्रांतिकारियों के विषय में जानिए और बताइए, जिनकी चर्चा प्रायः नहीं की जाती।
- किसी स्वाधीनता-सेनानी की प्रतिकूल परिस्थितियों का उल्लेख कीजिए।
- कविता में आए अन्य शब्दों के समानार्थी ढूँढने का अभ्यास कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- वर्तनी और भाषा की शुद्धता का ध्यान रखिए।
- कविता के आशय और संवेदना को अच्छी तरह समझिए।
- शब्दों के अर्थ एवं अभिप्राय को समझिए।
- कविता के उद्देश्य का उल्लेख कीजिए।
- कविता में आए उद्धरणों का क्रम याद रखिए।
- कविता के सौंदर्य-पक्ष को समझिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. अपने आस-पास के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखिए, जिसने जीवन में अथक संघर्ष किए, लेकिन सफल नहीं हो सका
2. आपकी नज़र में किसका महत्त्व अधिक है—सफलता का या सार्थकता का, 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   दुनिया किन लोगों को जल्दी ही भूल गई?

   (क) फाँसी पर झूलने वालों को

   (ख) बंदी जीवन जीने वालों को

   (ग) रिक्त तूणीर होने वाले वीरों को

   (घ) हिम-समाधि ले लेने वालों को